कुछ करो

किताबों के अक्षरों में
तेरा किरदार खिलेगा,
मेरी आँखों के जरिये
तूं राहगीर ही बनेगा,
पहुंचकर मेरे दिल में
तेरा चेहरा यूँ खिलेगा
बिखर के शबनमी बूंद
खिल खिल के जमेगी,
पत्तों की सिलवटों में
कसमसाती ही रहेगी,
प्रेम की हँसी वादियों में
कभी जिंदगी भी थमेगी,
जो कहते है हम तुम्हारे
क्यूँ बिछड़ते ही जायेंगे,
संघर्ष की इन राहों में
क्यूँ अकेला छोड़ जाएंगे,
ना करो इजहार प्रेम का
गर निभा ना सको तुम,
यह जीवन है अनमोल
इसे संभाल के रखो तुम,
फूल गुलदस्ते से खुलकर
बिखर बिखर तो जाएंगे,
उड़ा कर खुशबू अपनी
खुशी बाँट के जाएँगे

✍ गोपाल कृष्ण व्यास